PHILOSOPHY

Hons., Part III (Paper VIII)

Dr. S.K. Singh
Mob.-9431449951

'शंकाचार्य का अनिर्वचनीय ख्यातिवाद एवं रामानुजाचार्य का सत ख्यातिवाद' द्वारा खंडन

● शंकाचार्य :—

→ शंकाचार्य के अनुसार भ्रम की स्थिति में जिस वस्तु का प्रत्यक्ष ज्ञान होता है, वह अनिर्वचनीय है। शंकर के अनुसार भ्रम अविद्या है। अविद्या एवं इन्द्रिय दोष के कारण रज्जू में सर्प की प्रतीति होती है।

→ इनके अनुसार अविद्या के दो कार्य हैं - आवरण और विक्षेप। आवरण शक्ति के द्वारा अविद्या वस्तु के यथार्थ स्वरूप को ढक देती है और अपनी विक्षेप शक्ति के द्वारा अविद्या उस वस्तु पर किसी अन्य वस्तु को आरोपित कर देती है। परिणामस्वरूप प्रस्तुत वस्तु अन्य वस्तु के रूप में दृष्टिगत होती है।

● यही अध्यास है।

→ अध्यास की स्थिति में अध्यस्त का अधिष्ठान पर आरोपण हो जाता है। भ्रम और ज्ञान दोनों में किसी एक की ही प्रतीति होती है। भ्रम में केवल अध्यस्त की प्रतीति होती है जबकि ज्ञान में अधिष्ठान का ज्ञान होता है।

→ शंकर के अनुसार रज्जू के सर्प रूप ज्ञान में रज्जू अधिष्ठान है और सर्प अध्यस्त है। इस भ्रान्ति ज्ञान में सर्प सत् नहीं है क्योंकि कालान्तर में तत्त्वज्ञान के द्वारा इसका खंडन हो जाता है। पुनः यह बन्ध्यापुत्र की भाँति असत् भी नहीं है, क्योंकि वर्तमान में इसकी प्रतीति होती है। पुनः इसे जैनियों के समान सत्-असत् भी नहीं माना जा सकता क्योंकि ऐसा

Scanned with CamScanner

मानने पर आत्मविरोधाभास की स्थिति उत्पन्न होगी। इस प्रकार भ्रम का विषय सत्-असत् से विलक्षण होने के कारण अनिर्वचनीय है।

→ यहाँ यह उल्लेखनीय है कि रज्जु का सर्प के रूप में ज्ञान ही केवल भ्रम नहीं है अपितु रज्जु को रज्जु के रूप में सत् समझना भी भ्रम है। यहाँ रज्जु में सर्प का ज्ञान व्यक्तिगत भ्रम है, वहीं रज्जु को रज्जु के रूप में सत् या वास्तविक समझना समष्टिगत भ्रम है। यह पहला भ्रम प्रतिभास का स्तर है, जबकि दूसरा भ्रम व्यवहार का स्तर है। पहले भ्रम का खंडन ज्ञान से होता है जबकि दूसरे भ्रम का खंडन पारमार्थ-ज्ञान से होता है। ~~वास्तव~~

→ वस्तुतः ब्रह्म ही सत् है, जगत मिथ्या है; ऐसी स्थिति में जगत की वस्तुओं को वास्तविक या सत् समझना भ्रम ही है।

रामानुज द्वारा खंडन —

→ भ्रम को अनिर्वचनीय कहना भी उसका निर्वचन करना ही है। अतः अनिर्वचनीयता की अवधारणा आत्मविरोधी है।

→ रामानुज के अनुसार कोई वस्तु या तो सत् होती है या असत्। अनिर्वचनीय जैसी तीसरी कोटि नहीं होती।

→ शंकर भ्रम की समस्या की विवेचना के लिये अविद्या का सहारा लेते हैं। सत् पर आवरण डालना एवं अन्य को उस पर विक्षेपित करना - ये अविद्या के दो कार्य हैं, किन्तु स्वयं अविद्या का कोई अपना स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। ऐसी स्थिति में वह आवरण और विक्षेप का कार्य नहीं कर सकती। यदि भ्रम-ज्ञान कुछ देर के लिये ही सत्य है तो फिर उसे भ्रम नहीं कहा जा सकता।

Scanned with CamScanner